IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

Impact Factor: 7.301

Volume 3, Issue 2, January 2023

# ‘महायोगी गुरु गोरक्षनाथ के दर्शन में व्यष्टि-पिंड का स्वरूप’

**डॉ. गोविन्द प्रसाद मिश्र**

एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, (म.प्र)

**शोध सार**

अपने समय में प्रचलित युग प्रवाह को मोड़कर परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने वाले , तत्कालीन विचार, दर्शन व मत मतान्तरों के प्रवाह परिमार्जित कर उसके भीतर से सार्वयुगीन समग्र तत्व को प्रकट करने वाले दार्शनिक चिंतन से परिपूर्ण, योग मार्ग के उन्नायक महान सिद्ध योगी गुरु गोरक्षनाथ, नाथ सम्प्रदाय के प्रथम उत्कर्ष प्रदाता व शास्त्र प्रसिद्ध 84 सिद्धों में से एक ,उच्च कोटि के परम सिद्ध योगी हैं जिन्हें "गोरक्षनाथ सिद्ध सिद्धान्त संग्रह " ग्रंथ नामक में 'चतुरशीति सिद्धा :' वाक्य से सम्बोधित करते हुए नाथ योग सम्प्रदाय की गुरु परम्परा का प्रवर्तन कर्ता कहा गया है। नाथ योगियों का विश्वास है कि नाथ पंथ के प्रवर्तक आदि नाथ स्वयं भगवान शंकर हैं और गुरु गोरक्षनाथ भी शिव स्वरूप हैं। इसी कारण भक्तजनों ने उन्हें 'ॐ शिव गोरक्ष ' कहकर भी सम्बोधित किया है ।

नाथ सम्प्रदाय में योगी का लक्ष्य केवल समाधि की अवस्था में पहुँच कर दुःखों से निवृत्ति व परमात्मा की प्राप्ति ही नहीं है बल्कि स्वयं को सम्पूर्ण ब्रहमांड में और सम्पूर्ण ब्रहमाण्ड को स्वयं में अनुभूति की प्राप्ति है जिसे 'सामरस्य' सिद्धान्त कहते हैं।

गुरु गोरक्षनाथ के दर्शन में मानव शरीर को अधिक महत्त्व दिया गया है क्योंकि शरीर के माध्यम से ही योग साधक परमादर्श सामरस्य की प्राप्ति कर सकता है। नाथ पंथ में मानव शरीर को व्यष्टि पिण्ड की संज्ञा दी गई है और कहा गया है कि यह व्यष्टि पिण्ड , ब्रहमांड का ही सूक्ष्मरूप है। जो कुछ भी ब्रहमाण्ड में है वह सब इस मानव शरीर में सूक्ष्म रूप से विद्यमान है। नाथ योग परम्परा में व्यष्टि पिण्ड और ब्रहमांड में अभिन्नता की अनुभूति ही योग का परम लक्ष्य है, यही परमादर्श है , समरसीकरण है, यही मोक्ष है, असंग शिव स्वरूप की अनुभूति है । इस परम अनुभूति समरसता की प्राप्ति हेतु गुरु कृपा व शरीर शुद्धि या घट शोधन परम आवश्यक है जिसके लिए गोरक्षशतक में षडंग योग साधना का विधान है।

**बीज शब्द**- नाथ सम्प्रदाय. परमादर्श, असंग शिव, षडंग योग, व्यष्टि पिंड, सप्तपाताल |

जिज्ञासा मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति होने के कारण वह जीवन और ब्रह्माण्ड के रहस्यों को जानने के लिए हमेशा से उत्सुक रहा है | सत्यान्वेषी साधकों , सिद्ध पुरुषों एवं योगियों ने इस रहस्य को उजागर किया है जिसमे गुरु गोरक्ष नाथ के चिंतन का विशेष स्थान है | गुरु गोरक्षनाथ के चिंतन में मुख्य रूप से तीन बातों पर जोर दिया गया है- 1.योग साधना मार्ग, २.गुरु महिमा और 3.पिण्ड ब्रह्माण्ड की एकता |

भारतीय चिंतन परम्परा में **'यथा ब्रह्मांडे तथा पिण्डे'** की धारणा प्राचीन काल से ही चली आ रही है | जिन पञ्चभूतों से यह संसार बना है उन्ही पंचभूतों से शरीर भी निर्मित है | शरीर और ब्रह्माण्ड में सिर्फ निर्मायक तत्वों की ही समानता नही है अपितु सूक्ष्म रूप से इस मानव शरीर में वह सब कुछ है जो ब्रह्माण्ड में है | अथर्ववेद इस मानव शरीर की सूक्ष्म विशिष्टता को 'अष्ट चक्रा नवद्वारा देवानां पूर्योध्या' कह कर वर्णित किया है |

गुरु गोरक्षनाथ के अनुसार इस व्यष्टि पिंड के सम्यक ज्ञान द्वारा ही ब्रह्माण्ड का ज्ञान होता है | इस पिण्डशरीर में ब्रह्माण्ड के सभी तत्व सूक्ष्म रूप से निहित हैं जिनका योग साधना द्वारा प्रकटीकरण एवं पिण्ड-ब्रह्माण्ड समरसता का अनुभव ही योगी का लक्ष्य है और ऐसा ज्ञानी योगी ही पिण्ड संवित्ति कहलाता है – **'पिण्डमध्ये चराचरं यो जानाति स योगी पिण्ड संवित्तिर्भवति'** [1] ||

योग के परम आदर्श को प्राप्त करने के लिए, पिण्ड ब्रह्माण्ड समरसता को अनुभव करने के लिए मानव शरीर के सूक्ष्म स्वरूप को जानना आवश्यक है | इसीलिये पिण्ड संवित्ति का विवेचन करते हुए गुरु गोरक्षनाथ ने 'सिद्ध सिद्धांत पद्धति' में अखिल ब्रह्माण्ड (समष्टि पिण्ड) की इस मानव शरीर (व्यष्टि पिण्ड ) में सूक्ष्म रूप में उपस्थिति का विस्तृत वर्णन किया है | उनके अनुसार इस मानव शरीर रूपी पिण्ड में सप्त पाताल, सप्त लोक,देव लोक,सप्त द्वीप,नव खण्ड ,अष्ट कुल पर्वत,नौ नदियाँ ,सभी नक्षत्र ,स्वर्ग , नरक . मुक्ति आदि सभी सूक्ष्म रूप में विद्यमान होते हैं | पृथ्वी को सहारा देने वाला ब्रह्माण्डीय कूर्म सूक्ष्म रूप से व्यष्टि पिण्ड यानी शरीर के पैर के नीचे तल में अवस्थित है जो सम्पूर्ण शरीर को सहारा दिए हुए है | सप्तपाताल ( पाताल ,तलातल ,महातल,रसातल,सुतल,वितल,और अतल ) व्यष्टि पिण्ड में क्रमशः पैर के तल में,पैर के अंगूठे में,अंगूठे के अग्र भाग में,पैर के पृष्ठ भाग में,गल्फ में,जांघ में और जानु में सूक्ष्म रूप में अवस्थित हैं-

**कूर्मः पादतले वसति पातालं पादान्गुष्ठे तलातलं-अन्गुष्ठाग्रे महातलं पादपृष्ठे रसातलं गुल्फे सुतलं जंघायां वितलं जान्वोः अतलमूर्वेरिवं सप्तपातालं....** [2]

मानव शरीर में इन सप्त पातालों के अधिष्ठाता रुद्रदेव पिण्ड के मध्य में निवास करते हैं, इन्हें कालाग्निरूद्र भी कहते हैं- **.....रुद्रदेवाधिपत्ये तिष्ठति पिण्डमध्ये ....स एव कालाग्निरुद्रः** || [3] ब्रह्माण्ड में सात लोक हैं जिन्हें भूः लोक (पृथ्वी), भुवः लोक (अंतरिक्ष),स्वः लोक (स्वर्ग),महः लोक ,जनः लोक ,तपः लोक और

सत्यम लोक कहते हैं | मानव शरीर में ये सप्त लोक सूक्ष्म रूप से क्रमशः गुह्यस्थान-मूलाधार में ,लिंग स्थान में ,नाभि स्थान में,मेरुदंड के मूल में ,मेरुदंड के छिद्र में,मेरुदंड के नाल में तथा मूलाधार कमल में स्थित हैं- **भूर्लोकं गुह्यस्थानं...................तिष्ठति** | [4]

गुरु गोरक्षनाथ जी के अनुसार इस मानव शरीर के विभिन्न अंगों में विभिन्न देवताओं का सूक्ष्म लोक है | जैसे नाभि प्रदेश में विष्णु लोक है , हृदय में रूद्र ,ब्रह्मरन्ध्र में ब्रह्म लोक है - **विष्णु लोकः कुक्षौ तिष्ठति .....ब्रह्माण्ड स्थानविचारः** || [5] इसी प्रकार अन्य देवताओं के लोक भी व्यष्टि पिण्ड के भिन्न भिन्न स्थानो पर अवस्थित हैं जिनमे उन देव शक्तियों का वास होता है जो सुप्त अवस्था में होती हैं | योगाभ्यास द्वारा इनका जागरण एवं साक्षात्कार योगी का कर्तव्य है |

व्यष्टि पिण्ड में सप्तद्वीपों का वास बताते हुए गुरु गोरक्षनाथ कहते हैं कि मानव शरीर के मज्जा में जम्बू द्वीप का, हड्डी में शाक द्वीप का ,नाड़ियों में सूक्ष्म द्वीप का,त्वचा में क्रौंच द्वीप का,रोमों में गोमय द्वीप का,नसों में श्वेत द्वीप का तथा मांस में प्लक्ष द्वीप का स्थान है- **मज्जायां जम्बूद्वीपो.............सप्त दीपाः** | [6] ब्रह्माण्ड में स्थित सप्त समुद्र (क्षार,क्षीर,दधि,घृत,मधु,इक्षु, तथा अमृत ) क्रमशः व्यष्टि पिण्ड के मूत्र,लार,कफ़,मेद मज्जा ,चर्बी,रक्त,एवं वीर्य में होते हैं- **मूत्रेक्षारसमुद्रो ..........सप्तसमुद्रा** | [7] ब्रह्माण्डीय नवखण्ड व्यष्टि पिण्ड के नवद्वारों में स्थित हैं- **नवखण्डा नवद्वारेषु वसन्ति** | [8]

अष्ट कुल पर्वतों में सुमेरु,कैलाश,हिमालय,मलय,मंदराचल,विन्ध्याचल,मैनाक,तथा श्री शैल पर्वत का स्थान व्यष्टि पिण्ड में क्रमशः मेरुदण्ड ,मस्तक,पीठ,बांया कन्धा,दायाँ कन्धा,दायाँ कान,बायाँ कान,तथा ललाट है. अन्य उपपर्वत सभी अँगुलियों में होते हैं- **मेरुपर्वतो मेरुदण्डे तिष्ठति...........सर्वान्गुलिषु वसन्ति** | [9]

इड़ा ,पिंगला,तथा सुषुम्ना नाड़ियों में क्रमशः गंगा ,यमुना तथा सरस्वती नदी का वास है | नर्मदा,पीनसा ,पिपासा,शतरूपा,श्री रात्रि नदियाँ अन्य प्रधान नाड़ियों में विद्यमान हैं| अन्य उपनदियाँ शेष बहत्तर हजार नाड़ियों में होती हैं- **पीनसा ,यमुना, गंगा ..........नवनद्यो नवनाडीषु वसन्ति| अन्या.......द्विसप्ततिसहस्र नाडीषु वसन्ति** ||[10] इसी प्रकार सत्ताइस नक्षत्र,नव ग्रह,तारामंडल तथा अन्यान्य ब्रह्माण्डीय शक्तियां, कृमि,कीट,पतंग आदि भी व्यष्टि पिण्ड में निवास करती हैं- **सप्तविन्शति नक्षत्राणी.........अनेककृमिकीट पतंगा पुरीषे वसन्ति** || [11]

गुरु गोरक्ष नाथ का मत है कि स्वर्ग, नरक, बंधन और मुक्ति आदि भी इस मानव शरीर में उपस्थित हैं| विवेकवान मनुष्य के लिए जो शुभ कर्मों का फल - शरीर में सुख है वही स्वर्ग है, अशुभ कर्मों का दुःख-सन्ताप रूपी फल ही नरक है,सकाम कर्म ही बन्धन हैं और संकल्प रहित होकर निष्काम भाव से कर्म

करना,निर्विकल्प हो जाना मोक्ष है- **यत्सुखं तत्स्वर्ग,यद् दुखं तन्नरकं,यत्कर्म तद्बंधनं,यन्निर्विकल्पं तन्मुक्तिः** ‖ [12]

गुरु गोरक्षनाथ के अनुसार परम पिता ब्रहमा जी ने नर नारी रूप प्रकृतिपिण्ड अर्थात पञ्च भौतिक स्थूल शरीर, अन्तःकरण पंचक – मानसिक शरीर,कुल पंचक,व्यक्ति पंचक,प्रत्यक्षकरण पंचक, नाड़ी संस्थान,दस वायु,अस्थियाँ,रोम व् रोम कूपों तथा धातुओं से युक्त व्यष्टि-पिण्ड की रचना की | [13]

पंचभूतात्मक स्थूल शरीर के निर्मायक पञ्च महाभूत पृथ्वी,जल,अग्नि ,वायु और आकाश हैं | इस पंचभूतात्मक शरीर में पृथ्वी तत्व की अधिकता होने के कारण इसे पार्थिव शरीर भी कहते हैं जिसके अन्दर पृथ्वी के पांच गुण- अस्थि,मांस,त्वचा,और रोम(बाल)हैं | [14]

शरीर के अन्दर विद्यमान लार,मूत्र,शुक्र(वीर्य),शोणित(रक्त)और स्वेद(पसीना) ये पाँचों गुण जल तत्व के हैं| अग्नि,वायु और आकाश तत्व के भी शरीर में पांच पांच गुण हैं | पञ्च महाभूतों में प्रत्येक के पांच पांच गुण शरीर में विद्यमान हैं और इस प्रकार गुरु गोरखनाथ के अनुसार इन पंचभूतों के कुल पच्चीस समुदाय से ही यह पञ्च भौतिक शरीर उत्पन्न होता है -

**पञ्चविंशतिगुणानां भूतानां पिण्डः** [15]

स्थूल शरीर का संचालन सूक्ष्म शरीर (अन्तः करण ) द्वारा होता | अन्तः करण एक है किन्तु गुण और कार्य की दृष्टि से इसकी पांच अभिव्यक्तियाँ हैं- मन,बुद्धि,अहंकार,चित्त,और चैतन्य | यहाँ ध्याताब्य है की सांख्य - योग दर्शन में अन्तःकरण के अन्तर्गत केवल मन,बुद्धि और अहंकार की ही गणना की गई है जबकि वेदांत दर्शन अन्तःकरण चतुष्टय ( मन,बुद्धि,चित्त और अहंकार ) की बात करता है | गुरु गोरक्षनाथ इसमें चैतन्य को भी जोड़ देते हैं जिन्हें अन्तःकरण पंचक कहते हैं – **मनो बुद्धिः -अहंकारः - चित्तं – चैतन्यमित्यन्तःकरणपंचकं** | [16]

इन सभी के अपने अपने गुण और कार्य हैं | संकल्प, विकल्प,मूर्छा,जड़ता,और मनन ये पांच मन के गुण हैं | [17] विवेक,वैराग्य,शान्ति,संतोष,और क्षमा बुद्धि के गुण हैं | [18] अभिमान,मदीयं (अपनत्व का भाव ),मम सुख, मम दुःख ,मम इदम – ये पांच गुण अहंकार के हैं |[19] मति,धृति,स्मृति,त्याग और स्वीकार ये पांच चित्त के गुण हैं |[20] तथा विमर्श (विचार), शीलन (अभ्यास),धैर्य ,चिंतन और निस्पृहत्व नामक पांच गुण चैतन्य के हैं | [21]

मानव शरीर में प्राण व ज्ञान वाहिनी नाड़ी संस्थानों की विशेष भूमिका होती है जिस की योग के ग्रंथों में विस्तृत विवेचना है | गुरु गोरक्षनाथ जी ने भी व्यष्टि पिण्ड के अन्दर अवस्थित नाड़ी संस्थान पर प्रकाश डाला है | शरीर में सूक्ष्म रूप से अवस्थित बहत्तर हजार नाड़ियों में 72 नाड़ियाँ मुख्य हैं जिनमे से दस नाड़ियाँ – इड़ा ,पिंगला,सुषुम्ना,सरस्वती,गान्धारी,हस्तिजिहवका,पूषा,अलम्बुषा, कुहु व शंखिनी प्रमुख हैं |[22]

इनमे से भी प्रथम तीन नाड़ियाँ – इड़ा, पिंगला, और सुषुम्णा श्रेष्ठ हैं | इनमे भी यौगिक दृष्टि कोण से सुषुम्णा सर्वश्रेष्ठ नाड़ी मानी गई है|इसे ब्रहम नाड़ी भी कहते हैं | व्यष्टि पिण्ड में यह अपने उत्पत्ति स्थान मेरुदंड के निम्नतर भाग मूलकंद से होकर मूलाधार से आगे बढ़ती हुई मेरुदंड ( ब्रहमदंड) के रास्ते सहस्रार अवस्थित ब्रह्मरन्ध्र तक जाती है| कुण्डलिनी जागरण की स्थिति में कुण्डलिनी का सहस्रार में शिव से मिलन का मार्ग यह सुषुम्णा नाड़ी ही होती है |

इन नाड़ियों के अन्दर अनेक शक्ति और ऊर्जा के केन्द्र होते हैं जिन्हें योग की भाषा में चक्र कहते हैं | योग के ग्रंथो में इन चक्रों की संख्या सम्बन्ध में विभिन्न मत मिलते हैं | कहीं इनकी संख्या छह,कहीं आठ,कहीं नौ तो कहीं तेरह बताई गई है | किन्ही जगहों पर यह सख्या 108 तक कही गई है| अथर्ववेद आठ चक्रों की बात करता है-

**अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या |**

**तस्यां हिरण्यमयः कोशः स्वर्गोज्योतिषावृतः** || [23]

गुरु गोरक्षनाथ जी ने मानव शरीर में चक्रों की संख्या नौ बताई है | वे कहते हैं- **"पिंडे नव चक्राणि..."**[24] | उनके अनुसार ये नौ चक्र हैं- 1.मूलाधार में स्थित ब्रहमचक्र 2. सुषुम्ना नाड़ी के अन्दर लिंग मूल में स्थित स्वाधिष्ठान चक्र, 3.नाभि क्षेत्र में स्थित नाभि चक्र या मणिपुर, 4. हृदय क्षेत्र में स्थित हृदय चक्र या अनाहत , 5. कंठ क्षेत्र में कंठ या विशुद्धि चक्र , 6. तालू मूल में स्थित तालु चक्र , 7. दोनों भौंहों के बीच स्थित भ्रू चक्र या आज्ञा चक्र , 8. सहस्रार के एक भाग ब्रहमरंध्र में स्थित निर्वाण चक्र और 9. सहस्रार के सुमेरु पर स्थित आकाश चक्र | योग साधना द्वारा कुण्डलिनी शक्ति जागृत होने पर यहीं पहुँच कर शिव से पूर्ण आनंदमय मिलन करती है| एक योगी के लिए इन चक्रों की जानकारी होना आवश्यक है | गुरु गोरक्षनाथ के अनुसार जो योगी इन नव चक्रों आदि को सम्यक रूप से नही जानता वह केवल नाम मात्र का योगी है-

**नव चक्रं कलाधारं त्रिलक्ष्यं व्योमपञ्चकं |**

**सम्यग्मेतत न जानाति स योगी नामधारकः**|| [25]

गुरु गोरक्षनाथ ने सिद्ध सिद्धांत पद्धति में इन चक्रों स्थिति,इनका स्वरुप, योग साधना-ध्यान-व समर्थ गुरु की कृपा से जब इन चक्रों का जागरण होने लगता है तब इनके लक्षण, प्रभाव और योगी को होने वाले अनुभवों की विशद विवेचना की है | इन पिंडस्थ चक्रों की तुलना ब्रहमाण्डस्थ लोकों – भूः लोक , भुवः लोक ,स्वः लोक ,महः लोक ,जनः लोक ,तपः लोक और सत्यम लोक से की गई है | मानव शरीर में ये सप्त लोक सूक्ष्म रूप से क्रमशः गुहयस्थान-मूलाधार में ,लिंग स्थान में ,नाभि स्थान में,मेरुदंड के मूल में ,मेरुदंड के छिद्र में,मेरुदंड के नाल में तथा मूलाधार कमल में स्थित हैं- **भूर्लोकं गुहयस्थानं..................तिष्ठति** | [26]

इस प्रकार गुरु गोरक्षनाथ ने व्यष्टि पिण्ड में ब्रहमांडीय तत्वों की उपस्थिति को बताया है जिसका समर्थन अन्य यौगिक ग्रंथो / शास्त्रों द्वारा भी होता है | आदि योगी स्वयं भगवान् शिव ने पिण्ड में ब्रहमाण्ड की उपस्थिति का स्पष्ट वर्णन करते हुए कहा है कि-

**देहे-अस्मिन वर्नते मेरुः सप्तद्वीपसमान्वितः |**

**सरितः सागराः ,शैलाः क्षेत्राणि क्षेत्रपालकाः ||** [27]

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में लिखा है की- " हृदय में जितना प्रकाश है , वह सब अन्तर्यामी परमेश्वर से ही भर रहा है और उसी हृदयाकाश के बीच में सूर्य आदि प्रकाश तथा परलोक अग्नि,वायु,सूर्य,चन्द्र,बिजली और सब नक्षत्र लोक भी रह रहे हैं |जितने दिखने वाले और न दिखने वाले पदार्थ हैं, वे सब उसी की सत्ता के बीच में स्थिर हो रहे हैं".[28]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि गुरु गोरक्षनाथ का चिंतन एवं उनकी योग साधना प्रणाली शरीर रचना के सूक्ष्म निरीक्षण तथा उसमें अन्तर्निहित शक्तियों के जागरण व उसके उत्कर्ष पर आधारित है जिसका उद्देश्य प्राण शक्ति और मानसिक शक्तियों को अधोगामी से उर्ध्वगामी बनाकर उन्हें निम्नतम भौतिक तल से उच्चतम आध्यात्मिक स्तर पर ले जाना है जहाँ प्राण तथा मन का आत्मा से एकत्व , व्यष्टि पिण्ड का समष्टि पिण्ड से सामरस्य की अनुभूति होती है, जो जीवन का लक्ष्य है, परम आदर्श है किन्तु इस आदर्श की प्राप्ति उसी को हो सकती है जिसने योग्य गुरु के मार्गदर्शन में आसन,प्राणायाम,मुद्रा,बंध आदि योग की विभिन्न क्रियाओं, प्रत्याहार,धारणा,ध्यान को अपनाते हुए समाधि की उच्च अवस्थाओं में पहुँच कर आत्म साक्षात्कार कर लिया हो | ऐसा योगी ही इस मानव शरीर रूपी व्यष्टि पिण्ड में समष्टि पिण्ड यानी ब्रहमाण्ड का दर्शन और अनुभव कर सकता है |

## सन्दर्भ सूची

1. सिद्द सिद्धान्त पद्धति- 3.1, प्रकाशक-गोरखनाथ मन्दिर,गोरखपुर,2019.
2. वही-3.2
3. वही,3.2
4. वही,3.3
5. वही,3.5
6. वही,3.7
7. वही,3.8
8. वही,3.9

9. वही,3.10
10. वही,3.10
11. वही,3.12
12. वही,3.12
13. डॉ घारू & शंकर, नाथ सम्प्रदाय में योग का स्वरुप,पृष्ठ-160, प्रकाशक – सत्यम पब्लिसिंग हाउस , नई दिल्ली , 2010
14. सिद्द सिद्धान्त पद्धति, 1.36 , प्रकाशक- गोरखनाथ मन्दिर,गोरखपुर, 2019.
15. वही,1.53
16. वही 1.53
17. वही,1.45
18. वही,1.46
19. वही,1.47
20. वही,1.48
21. वही,1.49
22. वही,1.68
23. अथर्ववेद
24. सिद्द सिद्धान्त पद्धति-2.1, प्रकाशक- गोरखनाथ मन्दिर,गोरखपुर, 2019.
25. वही,2.31
26. वही,3.3
27. शिव संहिता
28. -घारू,डॉ नरेश कुमार & शंकर,डॉ नरेश , नाथ सम्प्रदाय में योग का स्वरुप, पृष्ठ-149 प्रकाशक – सत्यम पब्लिसिंग हाउस , नई दिल्ली , 2010

**अन्य सहायक सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. लोक भाषा संबर्द्धन में नाथ पंथ का योगदान | सम्पादक- डॉ प्रदीप कुमार राव , प्रकाशक – गुरु श्री गोरक्ष नाथ शोध एवं अध्ययन केंद्र , महराना प्रताप पी.जी.कालेज, जंगल धूसड , गोरखपुर ,2019.
2. गोरक्ष सिद्धांत संग्रह , सम्पादक- गोपी नाथ कविराज, गवर्नमेंट संस्कृत लाइब्रेरी, बनारस 1925 .

3. गोरखबानी , सम्पादक और टीकाकार – डॉ पीताम्बर बड़थ्वाल , हिंदी साहित्य सम्मलेन , प्रयाग 2003 .
4. नाथ सम्प्रदाय – डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी ,हिन्दुस्तानी एकडमी , इलाहाबाद (उ.प्र.)